समालोचनार्थ प्रतिलिपि

मई १९५५

सुखमार्ग

मासिक पत्र

प्रधान सम्पादक—
श्यामलाल "सुहृद" एल० एल० एम० एस०

लाभ की बात

सुखमार्ग के ग्राहकों को

आधे मूल्य में

जुकाम चिकित्सा—हर तरह के जुकाम का इलाज। मू० ।)

त्रिफला चिकित्सा—अनोखी पुस्तक सातवीं बार नई छपी हुई। मू० ॥)

लवण विज्ञान—नमक द्वारा समस्त रोगों का इलाज। मू० ।=)

मस्तिष्क—बुद्धि याददास्त बढ़ाने वाली पुस्तक। मू० ।)

संस्कार विमर्शन—सोलह संस्कारों का महत्व। मू० =)

सन्ध्या आत्म ज्ञान—संध्या और योग की वैज्ञानिक बातें। मू० ।-)

चाय विज्ञान—चाय पीवें या नहीं। मू० -)

स्वामी दयानन्द का जीवन। मू० =)

मनोरंजन—दिल बहलाव। मू० -)

हारमोनियम टीचर—नई छपी। मू० ॥।)

रावण बड़ा या राम—अर्थात् सच्ची रामायण का बालकांड मू० १।)

ऊपर की समस्त पुस्तकें ४) रु० की हैं आधे मूल्य २) में मिलेंगी।
महसूल १) रु० पड़ेगा। शीघ्र मंगाईये पुस्तकें थोड़ी ही हैं।

विज्ञापन दाता

अब हमने विज्ञापन छापना आरम्भ कर दिया है।

सुखमार्ग में विज्ञापन छपवा कर लाभ उठाइये।

विज्ञापन भेजिये।

सुख मार्ग

शारीरिक, आत्मिक, मानसिक तथा वैज्ञानिक आदि विषयों का

मासिक पत्र

सुखमार्ग के अनुसरण बिन जीवन सफल किसका रहा ।
सुन्दर सरल "सुखमार्ग" यह सुखमार्ग को दर्शा रहा ॥

वर्ष ३२	अलीगढ़ मई, १९५५ ई०	अङ्क ५

पिताजी बहुत आपके नाम

निराकार निर्लोभ निरंजन निर्विकार निष्काम ।
क्लेश कर्म आशय विवेक से नहीं आपको काम ॥
सर्वेश्वर सर्वज्ञ सर्वगत सुःखदायक सुखधाम ।
सुर नर किन्नर असुर सभी की सुध लेते सब याम ॥ पिताजी० ॥
ज्ञानागार ज्ञेय गणनायक गौपति गुण गण ग्राम ।
करुणा कर करुणा कर काटो क्लेश कुकर्म कुकाम ॥
लोक प्रसिद्धि वेद में यद्यपि बहुत आपके नाम ।
सुरेश स्वामी सत्य सरुपा ओ३म् ये ललित ललाम ॥ पिताजी० ॥

सुरेशचन्द्र 'सुहृद'

मन के विचारों से दुख और सुख

मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः ।

अर्थात्:—मन ही बन्धन (नरक-दुःख) और मोक्ष (स्वर्ग-सुख) का कारण है ।

जैसे तुम १० मील चलकर आये हो इसलिये कुछ थक गये हो अब तुम्हारे मन का विचार है कि कहीं भी न जाऊँगा जब तक कि कुछ विश्राम न करलूं, परन्तु, उसी क्षण यदि कोई तुम्हें ऐसा समाचार सुनावे कि तुम्हारा फलॉ स्थान का भाई या सम्बन्धी मरा जाता है, शीघ्र ही चले जाओ । अथवा ऐसी और कोई तीव्र सूचना मिले कि वहाँ जाना ही जरूरी हो तो तुम उठ कर झट चल दोगे और इस धुन में यदि वह स्थान १५ मील की दूरी पर भी है तो वहीं पहुँचोगे । इस तेज समाचार से तुम्हें जाने में कुछ भी थकावट न मालूम देगी । अब पाठकों ने समझा होगा कि मन ही ने आपके शरीर को कमजोर कर कहीं पर भी न जाने की आज्ञा दी और मन ही के विचार से उसी समय १५ मील चलना पड़ा

जाड़ों में देखिये कि बहुत से मनुष्य अधिक वस्त्र पहिनने पर भी ठंड मानते हैं । और कोई २ जन फटे हुए एक कुर्ते से ही खुश रहते हैं ।

यदि आपको अधिक क्षुधा लग रही हो, और उस समय ही अपने किसी प्रिय जन के मरने का समाचार मिले तो आपके मन से उसी समय सब भूख प्यास विदा हो जायगी ।

ऐसे बहुत से उदाहरण हो सकते हैं । उन्हें देकर हम पाठकों का समय व्यर्थ नहीं खोना चाहते । परन्तु इन सब बातों से यहां सिद्ध होता है कि शरीर पर मन का बहुत बड़ा प्रभाव है, शरीर ऐसा कोमल और आकर्षणीय यन्त्र है कि जिस प्रकार के विचार मन में आते हैं, उनके अनुकूल तुरन्त प्रवृत्ति करने लगता है, विचार भले हों या बुरे उनके अनुसार ही शरीर पर प्रभाव पड़ता है । इसलिये अपने मन के विचार को ठीक करो । बुरे, नीच और गन्दे विचारों से क्षण भर में शरीर की मशीन बिगड़ जाती है और मनुष्य एहलौकिक और पारलौकिक दोनों महान् घातक हो जाते हैं । और भी कहा है कि:—

न तीर्थानि न दानानि व्रतानि न चाश्रमा ।
दुष्टाशयः दुष्टरतिः प्रणष्टो व्याधितो यथाः ॥

अर्थात्—बुरी इच्छा और दुष्ट आशय (बुरे विचार) वाले मनुष्य को न तीर्थ यात्रा, न दान, न तप, और न चतुर्थ आश्रम-कर्त्तव्य परिपालन ही बरबादी से बचा सकते हैं, प्रत्युत

वह एक रोगी की तरह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, इसलिये उत्तमाशय वाले विचार करना चाहिये।

जिस प्रकार साफ़ सुथरी हवा और रोशनी के बिना तुम्हारा कमरा सुन्दर और स्वास्थ्य प्रद नहीं हो सकता? उसी प्रकार मनुष्य सतोगुणी और संतोष वाले विचारों के बिना उत्तम और स्वस्थ्य अर्थात् निरोग नहीं रह सकता। जिनका साधन संतोष आत्म विज्ञान, सत्यता दृढ़ता, पवित्रता और प्रसन्नता है।

बस? उपरोक्त साधनों के विचारों पर चलोगे तो दुःखों से छूटने का उपाय स्वयं तुम्हारे हाथ में है। अर्थात् सदैव कुविचारों को हटाते रहना चाहिये। कहा भी है—

अपपोहि मनसस्पते अपक्राम परश्चर।
रो निर्ऋत्या आचक्ष्व बहुधा जीवतो मनः।

काँच का गिलास

कवि पं छाजूराम

ज्ञानी, विज्ञानी राव रंक और साहूकार,
सबका घटाया तेज कामान्ध विलास ने।
संध्या अग्निहोत्र जप-तप से हटाया ध्येय,
विदेश की भाषा इस अंग्रेजी क्लास ने॥
अन्य संस्कृतियों से जनता बरबाद हुई,
धीरज छुटाय दीयो भूँख और पिलास ने।
वर्ण व्यवस्था धर्म कर्म का किया है नाश,
कहैं छाजूराम इस कांच के गिलास ने॥

साबूदाने का भाई

हिन्दुस्तान साप्ताहिक दिल्ली में छपा है कि टैपिओका के दाने अब उत्तर प्रदेश में साबूदाना के नाम से बिक सकेंगे। राज्य सरकार ने एक विज्ञप्ति में कहा है कि टैपिओका के दानों को साबूदाने के नाम से बेचना शुद्ध खाद्य अधिनियम के अन्तर्गत अपराध न माना जाएगा। सरकार ने यह निर्णय खाद्यस्तर निर्धारण करने वाली केन्द्रीय समिति के परामर्श पर किया है।

खाद्य-स्तर-निर्धारिणी केन्द्रीय समिति के परामर्श और उत्तर प्रदेश सरकार के निर्णय की दाद देनी ही पड़ेगी। जहाँ तक अपने राम का अनुभव है मिलावट की चीजों की रोक थाम के लिए सरकारों को बहुत माथापच्ची करनी पड़ती है। ऐसी चीजों की पकड़-धकड़ के लिए अनेक कर्मचारी चाहिए। फिर उन कर्मचारियों की ईमानदारी-बेईमानी पर निगाह रखने के लिए इंसपेक्टर चाहिए, उसके बाद अदालतें और उनकी द्रौपदी के चीर जैसी, कभी समाप्त न होने वाली, तारीखें-दर-तारीखें! है न मुसीबत? और फिर मिलावट वाला यह क्रम किसी एक चीज में हो तो भुगता भी जाए। दूध से लेकर दवा तक कोई भी इससे अछूता नहीं रह पाता। पिसी दवा और मुंडे फकीर की थाह का पता पाना वैसे भी कठिन है, इसलिए मसालों की छान बीन की तुलना में उन्हें घोल-घालकर खा-पी लेना ही अच्छा है। मेहंदी-पत्ता यदि ४०) मन हो तो मेंहदी-पिसी १६) मन आसानी से मिल जाती है। लीजिए ग्राहक को भी और दूकानदार को भी फायदा-ही-फायदा! ऐसी हालत में योग्य सरकारों को यही चाहिए कि वे इस मिलावटबाजी को वैध मानकर कम-से-कम अपना पल्ला तो झाड़ ही डालें।

एक बात और भी है—जिन दुष्ट रोगों को रोगी के शरीर में घुसकर साबूदाना खाने की बुरी लत पड़ी हुई है, वे अब टैपिओका के भय से कम-से-कम उत्तर प्रदेश के लोगों से दूर रहेंगे। फिर भी कुछ ऐसे ढीठ व्यक्ति हैं जो इस सत्कार्य की प्रशंसा करना तो दूर, उलटे यह प्रश्न करते हैं कि साहब, अगर टैपिओका के दानों को साबूदाने का बुर्का ओढ़ाने के बजाय उनके असली नाम से ही बेचा जाता तो क्या हर्ज था? हमें आशा है कि इन सब वाहियात ऐतराजों से हमारी सरकारें कतई ध्यान नहीं देंगी और शीघ्र ही सभी मिलावटों को वैध करने की दिशा में अग्रसर होंगी।

डा० पन्नालाल कविराज

स्वावलम्बन और स्वास्थ्य

स्वावलम्बन का अर्थ है अपना सहारा, आत्मनिर्भरता, स्वास्थ्य, Self-Reliance स्वावलम्बी व्यक्तियों से बना समाज और राष्ट्र अधिक सुदृढ़, सुसम्पन्न और सुरक्षित होता है जिसका उदाहरण आज का रूस, अमेरिका, चीन, ब्रेटेन, स्विटजरलैंड आदि हैं। कभी हम और हमारा राष्ट्र भी स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर थे। आज हम दृष्टि बिन्दु में खोखले हैं किन्तु चार हजार वर्ष पहले हम प्रत्येक दृष्टि से स्वाश्रयी थे। शासन साहित्य, कला, विज्ञान, व्यापार, स्वास्थ्य, चकित्सा, युद्ध, शस्त्रास्त्र, भूगोल, खगोल, ज्योतिष, गणित, आदि जीवन के किसी भी क्षेत्र में कौन ऐसा राष्ट्र था जो हमारा सामना करता था। विदेशी यहाँ के स्वावलम्बन पर मुग्ध थे हमारे देश में आकर ज्ञानार्जन करते थे और उसका प्रचार अपने देश में करते थे। यहाँ के ही ज्ञान विज्ञान से यूरुप और अमेरिका के ज्ञान विज्ञान की नींव पड़ी। पाठक जानते हैं पौट (pot) पात्र का, दस्त-हस्त का, मदर—मातृ शब्दों का अपभ्रंश है। हिन्दसे और डेसीमल भारतीय गणित के अंक और दशमलव प्रणाली हैं जो यहाँ से एशिया के पश्चिमी भागों में होता हुआ योरुप गया।

किस-किस की गिनती करें हमारे से विदेशियों ने उपादेय सब कुछ लिया और हम ८०० वर्षों की राजनैतिक दासता में अपना सब कुछ भूल गये सद असद का ज्ञान नहीं रहा। विदेशियों ने हम से ज्ञान विज्ञान रूपी मालियों का संग्रह किया और हमने उनसे विदेशी भाषा, छल, कपट, आदि के रूप में कांच के लुभावने चमकीले टुकड़ों का संग्रह किया जिन्हें अब स्वतन्त्र होने पर भी छोड़ना नहीं चाहते। कभी कोई भूतपूर्व न्यायाधिपति अंग्रेजी भाषा के देश में बने रहने का समर्थन करते हैं तो कभी विदेशी चिकित्सा सम्मेलन के प्रधान डा० सेन प्रभृति महोदय देश में केवल विदेशी चिकित्सा के प्रसार व शिक्षा का ही समर्थन करते हैं।

इन जैसे अनेकों नेता यदा-कदा ऐसा ही राग भिन्न २ क्षेत्रों के विषय में अलापते रहते हैं। लेकिन अब देश स्वतन्त्र हो चुका है हमारी नींद टूट चुकी है हम अब अपने पैरों पर खड़े हो रहे हैं अपने श्रेष्ट और आप व्यक्तियों के सद् विचारों कार्यों का अनुकरण करना निश्चय कर लिया है। हम समझने लगे हैं कि अपने देश में अपनी भाषा, अपना देश और अपनी ही औषधी द्वारा हमारा अभ्युदय होगा। हमारे आयुर्वेद का वचन है कि "यस्य देशस्य योजन्तु तस्य औषधम् हितम्, अर्थात्: हमें हमारे ही देश की औषधि लाभप्रद होगी। [शेष पृष्ट आठ पर]

कुं० रामपालसिंह, बरानदी

समाचार पत्र

ऐसा कौन मनुष्य होगा, जिसको यह जानने की अभिलाषा न हो कि संसार में क्या हो रहा है, कौन कौन नवीनाविष्कार हो रहे हैं और हमारे देश की क्या दशा है। यह सब जानने के लिये समाचार पत्रों से बढ़ कर और कोई अच्छा साधन नहीं प्रतीत होता। तभी तो अमेरिका यूरुप जापान आदि देशों में समाचार पत्रों का बड़ा महत्व है इसी कारण उनकी अधिकाधिक उन्नति हो रही है, वहां के पत्रों की तादाद भी अधिक है अमरीका को देखिये कि वहाँ के पत्रों की संख्या ३४ हजार के लगभग है। करीब ढाई हजार पत्र तो दैनिक निकलते हैं, शेष सप्ताह में २ बार और तीन बार भी निकलते हैं, पाक्षिक मासिक तथा अन्य पत्र इनमें शामिल नहीं हैं। केवल एक शिकागो नगर ही से ५० पत्र तो दैनिक प्रकाशित होते हैं, फिर भी बड़ी धूमधाम से चल रहे हैं, क्योंकि वहाँ की जनता को पत्रों से बड़ा प्रेम है, वहाँ जिस नगर में ५००० पांच हजार भी मनुष्य बसते हैं उन्हें अपना दैनिक पत्र निकालना भी कोई बड़ी बात नहीं है, एक गृह में ४ मनुष्य हैं तो चारों समाचार पत्र अपने २ स्वयं मोल लेते हैं, जिन देशों में पत्रों की इतनी क़दर हो वहां की उन्नति अनिवार्य्य है।

खेद ! कि भारतवर्ष की जन संख्या और समाचार पत्रों का मुकाबिला करते हुए अन्य देशों से मिलान किया जाता है तो सचमुच अवाक रह जाना पड़ता है, इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि भारतियों में समाचार पत्र अपनाने का प्रेम कम है, इसी अप्रेम के कारण समाचार पत्र भी थोड़ी संख्या से अधिक नहीं निकल सके, अन्य देशों में समाचार पत्रों से इतना प्रेम है कि वहाँ के मजदूर और महतर तक भी पत्रिकायें पढ़ते हैं, इसी कारण पत्र सहस्रों और लक्षों की तादाद में निकलते हैं, विलायत के अन्दर न्यून से न्यून जो पत्र छपता है वह १० सहस्र छपता है, संयुक्त प्रदेश अमेरिका में लिटररी डाइजैस्ट नामक एक साप्ताहिक पत्र निकलता है, जिसकी ग्राहक संख्या २५ लाख से भी अधिक है ऐसे कितने ही पत्र निकलते हैं। जिनकी ग्राहक संख्या लाखों में है। लेकिन हमारे देश में जन संख्या के सन्मुख बड़े से बड़े पत्र की भी ग्राहक संख्या सन्तोष दायक नहीं अर्थात् कुछ नहीं के बराबर है। बहुत से भारतीय वैसे साल भर में १०—२० रुपये का तमाकू पी खा थूक देते हैं, परन्तु एक पत्र के लिये १) २) खर्चना व्यर्थ समझते हैं, और बहुत से मंगाते भी हैं तो वे झूठे किस्से कहानियों वाले पत्र, जिन के चित्र देख

दाख कर इधर उधर डाल देते हैं, इस से विदित होता है कि भारतवासियों ने समाचार पत्रों के लाभों को नहीं जाना। मेरा पूरा विश्वास है कि जब तक समाचार पत्र व्यर्थ समझने का अज्ञान दूर न होगा तब तक उन्नति होना असम्भव है।

पाठको चेतोः—आप अपनी और देश की उन्नतावस्था लाने के लिये समाचार पत्रों को अपनाओ! क्योंकि समाचार पत्रों से देश देशांतरों की दशा मालूम होती है। गुप्त से गुप्त गूढ़ शिक्षाप्रद विषयों का पता मिलता है, नूतनाविष्कार सहज में मालूम हो जाते हैं। बहुत से समाचार पत्र हमें स्वयं कर्त्तव्य का ज्ञान कराते हैं। कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर लाते हैं। देश की भलाई करने को उत्तेजित करते हैं। ग़रीबों के ऊपर जुल्म करने वाले अत्याचारियों की पोल दिखलाते हैं, पाठकों की विवेचना शक्ति को पुष्ट करते हैं। इस लिये आपको चाहिये कि अपने यहां कम से कम एक पत्र तो अवश्य ही मंगाया करें। जिससे अपनी और पत्रों की तथा देश की उन्नति हो।

हलचल मचा देने वाला नवीन ग्रन्थ

रावण बड़ा या राम

लेखक— श्री श्यामलाल 'सुहृद'

इस रामायण में महाराज रावण एवं राम की वास्तविकता का सजीव दिग्दर्शन कराया है। महाराज रावण को राक्षस कह कर पुकारने वाली भ्रामक जनता इस पुस्तक को पढ़ कर वास्तविकता को शीघ्र ही समझ जायगी। राम और रावण की जन्म से लेकर मरण तक समस्त बातें रामायणों द्वारा लिखी गई। इतना ही नहीं? अन्य बातों के भी इस ग्रन्थ में आठ कांड हैं और सब में अपूर्व उदाहरणों का पूर्ण समावेश है। आज तक सम्भवतः कोई पुस्तक इस प्रकार की जनता में नहीं आई। शीघ्र ही अपना आर्डर भेजिये, बुकसेलरों, विद्यालयों को पूरा कमीशन दिया जावेगा। सचित्र जिल्द बंधी हुई' मूल्य केवल ४॥)

मंगाने का पता—सुखमार्ग कार्यालय, केमीकल प्रेस, मोहन गेट अलीगढ़।

[शेष पृष्ठ पाँच का]

अन्त में बहुत सी चीजों के मामले में हम एक तरह से आत्म निर्भर हो गये हैं। दुनियाँ की आंखों में हमारी प्रतिष्ठा बढ़ गई है। किन्तु स्वास्थ्य की दृष्टि से हमारा देश कितना कंगाल है। यहाँ पर कितनी बाल मृत्युएँ होती हैं? क्षय जैसी महामारी यहां के कितने लालों का जीवन नष्ट कर देती है? हैजा, चेचक यहां कितने उग्ररूप में फैलता है! स्वास्थ्य के लिये कितना रुपया देश से बाहर चला जाता है? कितने करोड़ रुपये विदेशी दवाइयों और चिकित्सा के साधारण एवं विद्युत यन्त्र शस्त्रों के चिकित्सक डकार जाते हैं। इसका उत्तर एक ही है वह यह कि हम स्वास्थ्य की दृष्टि के स्वावलम्बी नहीं। हम स्वास्थ्य के नियमों को नहीं जानते। जानते हुये भी उनके पालन में आलसी हैं।

कौनसा भारतीय चिकित्सक ऐसा है जिसकी गिनती चिकित्सा क्षेत्र में गिनी जाती है क्या यहां के चिकित्सक विदेशी दवाओं के एजेन्ट मात्र नहीं हैं। क्या वे जानते हैं कि वे जिन दवाओं का प्रयोग अपने देश वासियों पर कर रहे हैं उनके उपादान क्या हैं। और उनके दूरगामी दुष्परिणामों के दूरी करण में ठीक हैं? इसका उत्तर बस एक ही है वह यह कि हम स्वास्थ्य की दृष्टि से अभी स्वावलम्बी नहीं। हमारे देश के अधिकाँश शिक्षित और शासकों का ध्यान इधर जाता ही नहीं। व्यक्तिगत और सामाजिक स्वास्थ्य निर्माण का संदेश व सामिग्री जितनी अथर्ववेद के उपांग आयुर्वेद-द्वारा उपलब्ध है उतना संसार के किसी स्वस्थवृत शास्त्र (Hygiene) या चिकित्सा विज्ञान में विद्युत दीप लेकर खोजने पर भी प्राप्य नहीं है। राजनैतिक दासता ने हमारे मन पर भी अपना प्रभाव चढ़ा दिया जो अभी जाता नहीं। हमें नहीं दीखता कि हमारे हीरा, मोती और लाल कहां २ बिखरे पड़े हैं। विदेशी जन उनकी खोज करके प्रशंसा करते हैं तभी हम अपना अहोभाग्य मानते हैं।

ओ मेरे भोले देश भाइयों! आप अब स्वतन्त्र हैं। मन के ऊपर पड़े गुलामी के परदों को फाड़ दो। अपनी आँखों से देखो, कानों से सुनो, अपने स्वास्थ्य को सुधारो। आप्तजनों की सूक्तियों और आयुर्वेद के संदेश पर चलो। आयुर्वेद पुकार रहा है।

वाचस्पति शास्त्री, प्रयाग

महर्षि पाणिनि

संस्कृत-वाङ्मय में महर्षि पाणिनि की असामान्य प्रतिभा सर्वत्र देदीप्यमान है। भाषा-शास्त्र के आदि गुरू के रूप में महर्षिवर की वाणी सहस्रों वर्षों से संस्कृत के शब्दाकाश में चतुर्दिक शब्दायमान है। महामुनि का बहुमुखी व्यक्तित्व अपने ही देशकाल में सीमित न रहा अपितु विश्व इतिहास में उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा की पूजा हुई। सहस्रों वर्ष पूर्व भाषा व्यवस्था की जो रूप रेखा उन्होंने निर्धारित की थी, देशकाल के उत्थान पतनों को पार कर आज भी अपने मूल रूप में वह स्थित है। व्यापक व्याकरण शास्त्र के प्रणेता के रूप में पाणिनि का व्यक्तित्व युग युगान्तर तक अमर है एवं उनकी भारती का यशोगान शब्दातीत है।

पाणिनि की जीवन सम्बन्धी जानकारी के लिये अन्तिम रूप से एक अकाट्य मत उपस्थित करना अति दुष्कर है और भारतीय मुनीषियों के सम्बन्ध में यह भ्रान्ति इस लिये भी विवादास्पद हो गई है कि उन्होंने अपनी महानतम कृतियों तक को किसी महापुरुष या देवता विशेष के नाम लिखकर अपनी व्यक्तित्व-जिज्ञासा का स्वयं ही निराकरण कर दिया है। फिर भी आन्तरिक एवं बाह्य दुविधा प्रमाणों को आधारित मान कर विद्वान इतिहासकारों में इस सम्बन्ध में जो कुछ मंथन किया वह अनुकरणीय है।

पाणिनि का जन्म उस संक्रान्ति काल में हुआ जब एक ओर तो वेदों की रहस्यमयी गवेषणाओं की जिज्ञासा समाज में उत्तरोत्तर बलवती होती जा रही थी और दूसरी ओर व्यवस्था के अभाव में भाषा के क्षेत्र में घोर वितन्डावाद मचा हुआ था। वैदिक युग एवं लौकिक युग के इस संधिकाल में सुप्रसिद्ध भाषा शास्त्री निरुक्तकारयास्क ने भाषा के क्षेत्र में जितने भी सुधारकार्य किये एक सुनिश्चित व्यवस्था निर्धारित करने के लिये वे अपर्याप्त ही सिद्ध हुये। इस महानतम कार्य की पूर्ति महर्षि पाणिनि ने की।

पाणिनि का वास्तविक नाम अज्ञात है। यह उनका गोत्र नाम है। किन्तु इतना सुविदेत है कि वे गंधार (वर्तमान उत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्त) देशस्थ शालातुर ग्राम के रहने वाले थे। जैसा कि महाभाष्यकार ने 'शालातुरीय' कह कर उन्हें बार-बार अभिहित किया है। चीनी यात्री युआनसांग के उल्लेखानुसार उक्त ग्राम में पाणिनि की एक प्रतिमा प्रथम शताब्दी ईस्वी तक रही एवं व्याकरण की पाठ्यशैली बहुत समय पीछे तक पाणिनि' के नियमानुसार ही सम्पन्न होती रही। 'सर्वेसर्वयदादेशा दाक्षी

पुत्रस्य पणिनेः' महाभाष्यकार के इन प्रामाणिक वचनों से सिद्ध है कि महामानवी दाक्षी ने इस महामनस्वी को जन्म दिया। पिता का नाम शलंक एवं प्रसिद्ध स्मृतिकार देवल ऋषि इनके पितामह थे। ये देवल ऋषि वही देवल ऋषि हैं। जिनको महाभारतकार ने उद्धृत किया अथवा उनके उत्तरवर्ती कोई दूसरे हैं, इसमें विद्वानों का विवाद है। मैक्समूलर, वेबर, भांडारकर विल्सन, कीथ एवं डा० वसुदेवशरण अग्रवाल प्रभृति विद्वानों की उक्त बातों में लगभग एकसी राय है। किन्तु पाणिनि के स्थिति काल के सम्बन्ध में विद्वानों का विचार वैभिन्य है। प्रमाणिक विद्वानों के मत इस प्रकार हैं :

महापंडित मैसक्मूलर पणिनि का स्थितिकाल ३५० ई० पू० मानते हैं तो वेबर ४०० पूर्व एवी गोल्डेकर कर भांडारकर तथा श्री बलदेव उपाध्यायं ५०० ई० पू०. इसी प्रकार बलेवेलकर एवं कीथ ६००, ७००, ई० पू०, रजवाड़े और वैद्य ८००, ६०० ई० पू० पं० सत्यव्रत सामश्रमी २४०० ई० पू०, श्री युधिष्ठिर मीमांसक २८०० विक्रम पूर्व और डा० वसुदेव शरण अग्रवाल 'अष्टाध्यायी' के सम्यक मंथन के अन्तर पाणिनि को युधिष्ठिर एवं परीक्षित का समकालीन सिद्ध करते हैं तथा यह भी स्पष्ट करते हैं कि युधिष्ठिर और परीक्षित का समय आज से लगभग ४३६६ वर्ष पूर्व था।

सोमदेवः अ (११ वीं श०) कृत 'कथासरित्सागर' के उल्लेखानुसार अथकालेन वर्षस्य शिष्यवर्गो महानभूत्। तत्रैक पाणिनिनीम जड़बुद्धितरीभवत् ॥ ज्ञात होता है कि पाणिनि के गुरू का नाम वर्ष था एवं अपनी विद्यार्थी अवस्था में वे मन्दबुद्धि थे। इसी भांति आचार्य उद्भट (८ वीं श०) के कथनानुसार 'सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरन्याणान्नियान्पाणिनेः' पाणिनि का शरीरान्त एक सिंह द्वारा हुआ। इससे पूर्व 'पंचतन्त्र' की कथा में भी सिंह द्वारा पाणिनि का शरीरान्त होना वर्णित है।

अष्टाध्यायी और अन्य रचनायें

'अष्टाध्यायी' पाणिनि का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्० मय का अमर स्मारक है। इस विश्व-विश्रुत रचना की समक्षता अतुलनीय है। यही कारण है कि विख्यात वैयाकरणी सरमोनियर विलियम्स ने एक बार कहा था 'विश्व में आज तक व्याकरण के क्षेत्र में इतने बढ़ कर नियम कभी नहीं बने। अष्टाध्यायी का एक एक सूत्र गागर में सागर की भांति विस्मयोत्पादक है।

अष्टाध्यायी में कुल मिलाकर ३६६३ सूत्र हैं जो क्रमानुसार ८ अध्यायों में विभक्त हैं एवं प्रत्येक अध्याय चार पदों में वर्गीकृत है। यह ग्रन्थ जहां व्याकरण के क्षेत्र में अद्वितीय हैं वहां सहस्रों वर्ष पूर्व का ऐतिहासिक सांस्कृतिक,

भौगोलिक एवं सामाजिक ज्ञान भी इसमें समाविष्ट है।

लगभग तीस पूर्ववर्ती धुरंधर भाषा शास्त्रियों के ग्रन्थों का अनुशीलन कर 'अष्टाध्यायी' की रचना की गई है। पाणिनि के परवर्ती सहस्रों व्याकरण ग्रन्थ 'अष्टाध्यायी' के आधार पर रचे गये, किन्तु इतनी सर्वज्ञता किसी भी ग्रन्थ में न आ सकी। 'अष्टाध्यायी' भाषा-शास्त्र का आदि और अन्त समाहित है। इस दृष्टि से महर्षि पाणिनि व्याकरण-शास्त्र के सर्व प्रथम एवं सर्वान्तिम यशस्वी भाषाविद् सिद्ध होते हैं।

इसके अतिरिक्त शिक्षा, गणपाठ, धातुपाठ, और लिंगानुशासन चार रचनायें पाणिनि कृत जो बताई जाती हैं। जिनकी प्रमाणिका अधिकांश विद्वान मानते हैं। सुभाषित ग्रन्थों में पाणिनि के नाम से अनेक ललित पद्य पाये जाते हैं। विद्वान समीक्षकों की दृष्टि में जो गीतिकाव्य के उत्तम उदाहरण हैं।

महाकाव्यकार के रूप में पाणिनि का अनेक ग्रन्थों में उल्लेख हुआ है और अट्ठारह सांगों अनुपलब्धिकृति जाम्बवती विजय या 'पाताल विजय' उनका महाकाव्य माना जाता है। अनेक विद्वान वैयाकरण पाणिनि को महाकाव्यकार पाणिनि से भिन्न मानते हैं किन्तु राजशेखर (६ वी श०) की

नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविर भूदिह।
आदौ व्याकरणं काव्यमस्तु जाम्बवन्ती विजयम्।

यह उक्ति इस भ्रांति का निवारण करने के लिये यथेष्ट है। पाणिनि के नाम से एक बारह पृष्ठों का 'द्विरुपकोश' नामक कोश ग्रंथ इंडिया आफिस के कैटलाग में उल्लिखित है जिसके अंत में 'इति पाणिनि मुनिना कृत द्विरुपकोश सम्पूर्णम्, ऐसा लिखा है।

(अगले अङ्क में कात्यायन पढ़िये)

छन्द

कलयुग के लगत ही धर्म कर्म लोप भये,
पाखन्ड की बेल बढ़ी गाली देय मात को।
बहिन और भानजी का आदर कोई करे नहीं,
साले और सालियों की ऊँचो करें बात को॥
भाई भाई शत्रु भये अन्य गाढ़े मित्र भये,
गुरू की बुराई करें त्यार वारदात को।
शंकर समय ऐसा सुना और पढ़ा नहीं,
कलयुग में बेटा करें बाप की बरात को॥

शङ्कर कवि कौड़ियागंज

श्री गुरुदयाल वैद्य, अलीगढ़

भारत का भूत

शानदार या भूत भविष्य भी महान है
उंभालें आप यदि उसे जो वर्त्तमान है

वाचक वृन्दो यह बात निःसन्देह तथा निर्विवाद है प्राचीन समय में यह हमारी भारत भूमि जो इस समय जीर्ण-शीर्ण है अधोपथ पर अग्रसर है, उन्नति के उच्चतम शिखर पर आसीन थी। आधुनिक विज्ञान पूर्व का पासंग भी नहीं। आर्य धर्म के प्रवर्त्तक त्यागी तपस्वी महार्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वरचित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ११ वें समुल्लास में लिखते है कि "जितनी विद्या और मत भूगोल में फैले है वे सब आर्यवर्त देश से ही प्रचलित हुए हैं इन पक्तियों का एक एक एक अक्षर सत्य है उदाहरण रूप में में लीजिये केवल नौ चिह्नों के अङ्कों से समस्त गिन्ती पहाड़े संख्या लिखने की उन्नति सब से प्रथम भारत के गणितज्ञों ने आविष्कृत की थी यहां से अरब देश-वासी सीख कर अपने देश में गए और वहां उसका प्रचार किया वे इस देश को हिन्द कहते थे अतः हिन्द से सीखी हुई विद्या का नाम अपनी कृतज्ञता प्रकाश नार्थ इल्म हिन्दसा रखा। इसी आशय को एक कवि ने निम्न पद्य में व्यक्त किया है

जिस अङ्क विद्या के विषय में बाद मुख
वन्द हैं वही भी के क्षान रवि की रश्मि
एक आनन्द है। डर कर कठोर कलङ्क
सेवा सत्य के आतंक से कहते अरब
वाले अभी तक हिन्दसा ही अंक है

अरब वालो अभी से इंगलैंड वासियों ने सीखा और वे उसको अरेबिक फिगर ARABIC figure कहते है।

प्रायः मनुष्य साईकिल (cycle) बिजली के electrictan, के वर्त्तमान विज्ञान की नई दैन तथा आविष्कार मानते है किन्तु ऐसा मानना भारी भूल है क्यों कि भोजप्रबन्ध में एक श्लोक इस प्रकार का आता है।

घटैकया क्रोश दशौकभश्रवा।
सुकृत्रमो गच्छति चारु गत्या॥
वायु ददातिव्यजन सुतुष्कलम।
विना मनुष्यसाप चलत्यजस्रम॥

राजा भोज के समय में एक शिल्पी ने ऐसा घोड़ा बनाया जो २४ चौबीस मिनट में ग्यारह कोस चलता था और एक परेवा या जो बिना मनुष्य के चलाये ठण्डी वायु देता था। यह पंखा ऐसा कि जब आदमी इसके निकट बैठता था तब ही यह पंखा चलकर ठण्डी वायु देता था। आंदमी के हट जाने पर पंखा स्वयं बन्द हो जाता था। खेद है इन दोनों वस्तुओं में से आज एक भी विद्यमान नहीं।

भगवान मनु जी अपनी मनुस्मृति में लिखते हैं।

एतद्दे प्रसूतस्य सकाशाग्र जन्मनः
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्वमाव्वाः

अर्थात् पृथ्वी के समस्त मनुष्य अपने अपने योग्य चरित्र तथा विद्या इस देश (भारतवर्ष) में पैदा हुये अग्रजन पुरुषाओं के पास से सीखे। इस श्लोक से स्पष्टतया: पता चलता है कि यह भारत देश सम्पूर्ण विश्व का विश्वविद्यालय था और इस देश के अग्रजन पूर्व पुरुषा जगत गुरु थे उनके पास आकर लोग अपने योग्य नाना विद्याओं को सीखते थे।

यूनान देश वासी यह वैद्यक विद्या चिकित्सा शास्त्र पढ़ने आये। यहां उस समय के चिकित्सक इस चिकित्सा कार्य को केवल परोपकार के लिये ही करते थे इसके द्वारा धन कमाना तो अलग रहा उनको यश कमाने की भी इच्छा नहीं होती थी। जब यूनान देश वासी इस विद्या को सीखकर अपने देश यूनान में गये तो वहाँ जाकर उन्होंने भी परोपकार के लिये तथा जनता को रोगों से मुक्त करने के लिये चिकित्सा कार्य किया धन नहीं कमाया। और उन्होंने इसका नाम अल्ला पथ (राहे खुदा) रक्खा वास्तव में इससे बढ़कर ईश्वर प्राप्ति का और सुगम मार्ग क्या हो सकता है। वहाँ से जब यह विद्या योरूपियन देशों में आई तब इस विद्या का नाम अल्लापथ से ऐलोपेथी Allopathy पड़ा और आज तक सर्वत्र इसी नाम से प्रसिद्ध हैं कुछ पाश्चात्य चिकित्सक कहते हैं कि आयुर्वेद में पैथोलोजी Pathology नहीं है जिस अभाव के कारण ठीक रोग निर्णय नहीं हो पाता किन्तु यह बात नहीं स्वयं शब्द पैथोलौजी Pathylogy ही संस्कृत के शब्द पथा लोची का अपभ्रंश है। और आलोची यथालोची का अर्थ शरीर में रोग किस मार्ग से घुसा, पैदा हुआ जो इस बात की आलोचना करें वह पथालोची हुआ अभिप्राय: यह है कि यहां के चिकित्सकों को चिकित्सा सम्बन्धी ऐसे ऐसे प्रगूढ़ सिद्धान्त अवगत थे जिन तक पश्चिमीय चिकित्सकों की पहुंच भी नहीं पहुंची इस लेख की पुष्टि में कुछ आङ्गल विज्ञ विद्वानों के अवतरण उद्धृत करते है।

India was the mothuer land of one race, and sanskrit the mother of Europe's languages, she was the mother of our Philosphy; mother through the Arabs of much of our mathemetics, mother India is in many ways the mother of us all.

(Vision of India
by will. Durant)

अर्थात् भारतवर्ष हमारी जाति की माता, संस्कृत सारी यूरोपीय भाषाओं की जननी है। भारत हमारे दर्शन शास्त्र का उद्गम, अरबों द्वारा गणित की जननी है। अधिक क्या कहा जावे, भारत प्रत्येक क्षेत्र में हमारा पथ प्रदर्शक और भूत है।

स्वामी ब्रह्मानन्द दंडी, गुरुकुल, एटा

जल स्नान

ईश्वर ने जीवन की बड़ी बड़ी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये जल एक अत्यन्त उपयुक्त पदार्थ बनाया है, शरीर की शुचिता और स्वस्थ्य की रक्षा तथा धर्म कृत्यों के लिये जल ही की परमावश्यकता होती है। यदि इस का ठीक २ उपयोग किया जाय तो इसके द्वारा मनुष्य समाज की भयंकर व्याधियां दूर की जा सकती हैं। चरक-सुश्रुत की सभी दवाइयों को यदि एक ओर रख दिया जाय और दूसरी ओर जल को फिर भी दवाओं की अपेक्षा जल में अधिक लाभ पहुँचाने की शक्ति है। जल कितनी ही विधि से हम अपने उपयोग में लाते हैं, लेकिन यहाँ स्नान के उपयोग का उल्लेख करते हैं। शुद्ध जल से प्रति दिन प्रातःकाल सारे शरीर को अच्छी तरह मल कर धोने का नाम स्नान है।

भोजन करने और मल त्यागने की भाँति स्नान भी एक दैनिक कर्म है। स्नान करना स्वास्थ्य के लिये परमावश्यक कार्य है, स्नान से चर्म के छिद्र खुल जाते हैं। पसीना आसानी से निकलता रहता है। शरीर में बल आता है। रुधिर की गति ठीक बनी रहती है। थकावट दूर हो जाती है। आलस्य मिटता है। गर्मी और खुजली नष्ट हो जाती हैं, हृदय की दाह मिटती है, शरीर का भारीपन दूर होता है। फुर्ती और उमंग बढ़ती है। दिल और दिमाग ठण्डे हो जाते हैं सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

कहा भी है:—

पवित्रं वृष्यमायुष्यम् श्रम स्वेद मलापहम्
शरीर बल सन्धान स्नानमोजस्कर परम्॥
दौर्गन्ध्य गौरचंतन्द्रा कण्डू मलमारोचकम।
स्वेदं बीभत्सतां हन्ति शरीर परि मार्जनात्॥

स्नान सम्बन्धी आवश्यक बातें:—

सदैव ताजे जल से प्रातः समय स्नान करना चाहिये। शीत ऋतु में केवल एक बार ही स्नान काफी है। गर्मियों में २ बार और वर्षा ऋतु में ३ बार भी स्नान कर सकते हैं।

स्नान प्रथम सिर से करना चाहिये फिर सब अंगों पर ऊपर से धोते हुये जल डालें पहिले सिर फिर नेत्र, ग्रीवा हृदय, नाभि, फिर पैर इस प्रकार धोकर फिर सर्वत्र शरीर पर ऊपर से जल डालें यही क्रम सन्ध्या करने के मार्जन मंत्र "ओ३म् भूपुनातु शिरसि" में बतलाया गया है ग्रीवा (नार) के ऊपर के हिस्से में गरम पानी डालने से नेत्र और बालों को नुकसान होता

है इसलिये शुद्ध ताजा जल ही ठीक होता है। सदैव ठंडे जल से स्नान करने से सर्दी जुकामादि रोग सहज नहीं होने पाते। स्वस्थ पुरुष को खुली हवा में स्नान करना बड़ा लाभकारी है। शीत काल में यदि गरम जल से स्नान करें तो उस गरम जल की गरमी ९२ से ९८ डिगरी तक होनी चाहिये। गंगा आदि बड़ी नदी या समुद्र के पानी में तैर कर भी स्नान स्वास्थ्य को बड़ा लाभदायक है। भोजन के बाद शीघ्र ही स्नान करना ठीक नहीं है क्योंकि भोजन के पचाव में विघ्न पड़ता है। स्नान के बाद शरीर को देशी सूत के अंगोछे से रगड़ कर पोंछ डालना चाहिये। बस? स्नान के सम्बन्ध में उपरोक्त बातों का ध्यान रखने से रुधिर का संचालन ठीक होता है। आरोग्यता के लिये विशेष लाभ होता है।

ग्रीष्म ऋतुचर्या

जेठ और आसाढ़ के महीनों को ग्रीष्म ऋतु कहते हैं। इस ऋतु में सूर्य की प्रखरता विशेष होती है, और कफ़ कम हो जाता है। गरमी बढ़ जाती है, जिससे रुक्षता और उष्णता के कारण वायु का संचय होने लगता है। इसलिये इस ऋतु में कडुई, गरम, चरपरी, खट्टी तथा भारी वस्तु न खाना और धूप, आग का तापना, अधिक रास्ता चलना, गरम जल से न्हाना, लुयें में रहना; मैथुन करना, परिश्रम का काम और तेल आदि का व्यवहार करना मना है।

चन्दन का लेप, शीतलपवन छाया में रहना तहखानों में सोना, सुगन्धित फूलों का व्यवहार, चांदनी का सोना, झरना या बड़ी नदी का स्नान, शीतल जल का पीना, शरबत, दूध, घी, भात खांड़, सत्तू, इमली, आम के पने, लौका, पोदीना के रायते, दही आदि का व्यवहार इस ऋतु में अच्छा है।

इस ऋतु में नैऋत्य दिशा का वायु बहता है। यह रूक्ष, उष्ण और कफ़ नाशक है। इससे अम्लपित्त रक्त पित्तादि रोगों की उत्पत्ति होती है, और बल घटाने वाला होता है। इसलिये ठंडी चीजें व्यवहार करें। जो हरड़ का सेवन करते हों वह इस ऋतु में गुड़ के साथ करें।

सूचना

आर्य समाजों, कांग्रेस कमैटियों, सेवादलो वैद्य मंडलों को चाहिये कि अपने अपने यहाँ के कार्यकर्ताओं के नाम व चुनाव आदि समाचार बिना मूल्य छपने के लिये भेजे और सुखमार्ग मगावें।

—मैनेजर

हरीशचन्द्र 'आर्य', चंदौसी

"ब्रह्मवाद"

आज का युग 'वादों' का युग है। साम्यवाद, समाजवाद, व्यक्तिवाद एवं प्रगतिवाद आदि अनेकों 'वादों' का वाद-विवाद हमको प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर होता है। ऐसी दशा में 'ब्रह्मवाद' के रूप में एक नवीन वाद का प्रतिपादन कुछ अटपटा सा भी प्रतीत हो सकता है किन्तु तथ्य वास्तव में यह है कि 'ब्रह्मवाद' कोई नवीन 'वाद' नहीं है वरन् यह तो है आज से सहस्त्रों वर्ष के हमारे ऋषियों की देन ! उनकी वर्षों की कठिन तपस्या का फल है, जिसे कुछ तो समय के परिवर्तन के कारण और कुछ पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में आकर हम उस अगम्य ज्ञान-कोष को एक कौड़ी से भी तुच्छ समझते हैं और समझते यह हैं कि आज के वैज्ञानिक युग में प्राचीनता की बातें करना केवल अपनी प्रगति को अवरुद्ध करना है। आज हम यह नहीं समझते कि हमारा प्राचीन भारतीय दर्शन आधुनिक युग के बड़े से बड़े वैज्ञानिक आविष्कार से कम महत्व नहीं रखता। आधुनिक विज्ञान जहाँ अधिक से अधिक प्राणियों के नाश के प्रयत्नों में संलग्न है वहाँ भारतीय दर्शन संसार के प्रत्येक प्राणी में 'ब्रह्म' की झलक दिखा कर यह पुकार २ कर कह रहा है कि संसार के अधिक से अधिक प्राणियों का जीवन किस प्रकार सुखमय बनाया जा सकता है। वर्तमान युग के भयंकरतम 'हाइड्रोजन' व 'परमाणु बम' जैसे आविष्कारों ने ऐसे प्रगतिवादियों की आँखें खोलना अब प्रारम्भ करदी हैं। अब संसार यह पुनः सोचने लगा है कि केवल वैज्ञानिक प्रगति ही सर्वांगपूर्ण प्रगति की प्रतीक नहीं बन सकती। विज्ञान Physics के साथ २ दर्शन Meto Physics का समन्वय होने पर ही संसार का महा-विनाश टल सकता है, वरना केवल वैज्ञानिक-प्रगति का परिणाम उस अबोध अज्ञानी बच्चे के समान ही हो सकता है जो क्रमशः प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता २ यकायक एक गहरे गड्ढे में गिर कर समाप्त हो जाता है।

'ब्रह्मवाद' ही वास्तव में एक ऐसी प्रकाश की किरण है जो आज अंधकार-मय विनाश के भयङ्कर गर्त में गिरते हुए संसार को महा विनाश से बचाने की सामर्थ्य रखती है।

'ब्रह्मवाद' का तात्पर्य स्पष्टतः 'ब्रह्म' या 'परमात्मा' को समझने की चेष्टा है। संसार के समस्त धर्म यह अवश्य मानते हैं कि 'ईश्वर' नामक कोई दैवी-महाशक्ति अवश्य ही अपना अस्तित्व रखती है जिसके इशारे पर

यह समस्त सृष्टि का चक्र चल रहा है, किन्तु उस महाशक्ति को समझना अब तक भी एक समस्या या रहस्य बनी हुई है ! उसी महाशक्ति का रहस्योद्घाटन करने या 'ब्रह्म' का साक्षातकार करने का प्रयत्न 'ब्रह्मवाद' अपने दृष्टिकोण से करता है—जिसके सम्बन्ध में गीता में कहा गया है—

'मूढ़ा नान् पश्यन्ति—पश्यशि ज्ञान चक्षुषा ! 'अर्थात् उस 'ब्रह्म' को मूर्ख मनुष्य कदापि भी नहीं समझ सकता क्योंकि 'ब्रह्म' का साक्षातकार करने के लिये तो ज्ञान की बेल चाहिए !

वर्तमान युग के महान दार्शनिक 'कार्ल-मार्क्स' द्वारा प्रतिपादित 'साम्य-वाद' को 'ब्रह्मवाद' भारतीय दृष्टिकोण से देखता है दूसरे शब्दों में '-वाद' के साम्यवाद के शरीर में 'भारतीय आत्मा' की प्रतिष्ठा करता है । 'ब्रह्मवाद' साम्यवाद के नास्तिक दृष्टिकोण में आस्तिकता का समावेश करता है। दूसरे शब्दों में 'ब्रह्मवाद' 'साम्यवाद' का भारतीयकरण है । 'साम्यवाद' केवल मानव शरीर तक ही पहुँचाता है परन्तु 'ब्रह्मवाद शरीर के साथ २ मानव की अंर्तात्मा तक भी पहुँचने का प्रयत्न करता है जो वास्तव में एक सार वस्तु है जैसा कि वेदान्त के अनुवाद स्वरूप इस दोहे से प्रगट होता है—

'पांच तत्व दस इन्द्रियां, यह सर्वत्र समान।
देह सदा जड़ रूप है, येही चेतन जान ॥

समानता 'भौतिक-जगत' से नहीं मिल सकती । दो सहोदर भाइयों के भी विचार-स्वभाव व स्वरूप भिन्न २ होते हैं । समानता यदि संसार में कहीं है तो केवल 'अध्यात्म जगत' में । केवल प्रत्येक मनुष्य की आत्मा में ही समानता पाई जाती है । इस प्रकार 'ब्रह्मवाद' 'साम्य-वाद' के उन अपूर्ण स्वांसों को पूर्ण करने की सामर्थ्य रखता है जिसे 'साम्य-वाद' अपना अन्तिम लक्ष्य या उद्देश्य तो समझता है किन्तु उसे प्राप्त करने में आज तक असफल रहा है 'ब्रह्मवाद' के द्वारा ही एक ऐसे 'राम-राज्य' की स्थापना का स्वयं साकार हो सकता है जहां जनता का चरित्र-स्तर इतना ऊँचा उठ जावे जबकि उसके लिए किसी प्रकार के भी नियन्त्रण की आवश्यकता न रहे ।

'ब्रह्मवाद' को समझने और हृदयं-गम करने पर ही संसार में पुनः उस स्वर्णिम प्रभात का उदय हो सकता है जब मनुष्य में मनुष्यता ही नहीं वरन देवत्व का भी उदय हो सकता है । तब आइयेगा इस 'ब्रह्म' को समझने का प्रयत्न किया जावे ।

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसका हृदय परिवर्त्तन कड़े से कड़ा कानून भी नहीं कर सकता, कानून किसी कानून भंग करने वाले को केवल दन्ड ही दे सकता है हृदय परिवर्त्तन तो तभी संभव हो सकता है जब कि मानव के हृदय में ही स्वयं सुधार की प्रेरणा उत्पन्न हो जावे । आधुनिक 'मनोविज्ञान' भी

यही बताता है कि मनुष्य के चरित्र निर्माण की उच्चतम अवस्था वह होती है जबकि उसका चरित्र व उसके कार्य 'आत्म सम्मान के स्थाई-भाव' (Self-Regarding-Sentiment) द्वारा निर्धारित होते हों। 'ब्रह्मवाद' का उद्देश्य मनुष्य के हृदय में इसी 'आत्म-सम्मान के स्थाई भाव' को उच्चतम अवस्था तक पहुँचाना है, जहां पर पहुँच कर वह स्वयं और 'ब्रह्म' में अभिन्नता का अनुभव करने लगे।

श्री स्वामी अभेदानन्द जी ने ऋग्वेद के निम्न मन्त्र की व्याख्या करते हुए बतलाया है कि समस्त सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ प्राणी कौन है ? यथा—

भूतानाम् प्राणिनः श्रेष्ठः,
प्राणिनाम बुद्धि जीविनः।
बुद्धि जीवनेषु नरः श्रेष्ठः,
नरेषु ब्राह्मण स्मृतः।
ब्राह्मणेषु च विद्वान सः,
विद्वत सु कृत बुद्धयः।
कृत बुद्धेषु च कर्त्ता,
कर्त्तपु 'ब्रह्म - वेदिनः' ॥

सृष्टि के समस्त प्राणियों की तुलना करते हुए केवल यही बतलाता है कि समस्त सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ प्राणी हैं जो ब्रह्म-वेदिनः' अर्थात् परमात्मा या 'ब्रह्म' को समझने वाला है।

किन्तु प्रश्न उठता है—कि क्या 'ब्रह्म' को समझना मनुष्य की सामर्थ्य है ? इसका उत्तर उपरोक्त मन्त्र स्वयं दे रहा है ! यदि 'ब्रह्म' को समझना सम्भव न होता तो मन्त्र में सृष्टि के अन्तर्गत ऐसे ब्रह्म-वेदिनः' प्राणी का वर्णन ही क्यों आता ? हाँ यह अवश्य कह सकते हैं कि इस समय संसार में ऐसे मनुष्य बहुत कम हैं जिन्होंने 'ब्रह्म' को समझा है। और "जिन्होंने इस 'ब्रह्मानंद' की प्राप्ति करली है उनकी दृष्टि में त्रैलोक्य का राज्य भी तुच्छ प्रतीत होता है" यह शब्द हैं महाराज भतृहरि के 'वैराग्य-शतक' के अन्तर्गत ! अतएव 'ब्रह्म-वेदिन' मनुष्य अपने में ही मस्त रहता है। इस नश्वर संसार के प्रांगण से दूर रहता है क्योंकि इस संसार में 'माया' का साम्राज्य है और ऐसे मनुष्यों की संख्या भी अत्यन्त कम है जो 'ब्रह्म-विद्या' के जिज्ञासु मनुष्य आज विज्ञान की ओर पहुँचकर भी वास्तविक आनन्द और चिन्ताओं से मुक्ति पाने में असमर्थ हैं ! उसका एक मात्र कारण यही है कि उसने आज तक स्वयं को और 'ब्रह्म' को समझने की चेष्टा नहीं की !

संसार में 'मृत्यु' ही एक ऐसी वस्तु है जो मनुष्य को यह समझने के लिए विवश करती है कि मनुष्य को किसी ऐसे ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है जो उसके हृदय से 'मृत्यु' का भी भय निकाल सके ! और उसे 'जीवन-मरण' का रहस्य समझा सके !! गौतम 'बुद्ध' के हृदय में भी ज्ञान का प्रथम अंकुर किसी मनुष्य की मृत्यु देखकर ही हुआ। आखिर मृत्यु कहते किसे हैं अथवा वह किस अवस्था का नाम है ?

प्रश्न वास्तव में बड़ा दुष्कर एवं कठिन सा है क्योंकि मृत्यु की अवस्था का अनुभव कोई कर ही नहीं सका और न कोई पूर्ण रूपेण बता ही सकता है किन्तु कवि अपनी कल्पना शक्ति की सहायता से उस सूक्ष्म रहस्य को भी जान सकता है।

इस शरीर रूपी घड़ा में आत्मा रूपी जल भरा हुआ है! मृत्यु मानो उस घड़े का फूटना है घड़ा फूटते ही वह आत्मा रूपी जल-परमात्मा रूपी महान जल राशि में मिल जाता है।

इस प्रकार मृत्यु के भेद को समझने के पश्चात-मनुष्य स्वयं को, अपनी चेतना शक्ति को समझने के योग्य बन सकता है! इसी को 'आत्म-दर्शन' भी कह सकते हैं! योगी अपनी साधना को यमनियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, द्वारा अष्ट चक्रों का भेदन करके आत्म-दर्शन कर लेते हैं! किन्तु प्रत्येक मानव ऐसा नहीं कर सकता!

कर्मेष्टी को 'ब्रह्म' का साक्षातकार करना कोई असम्भव कार्य भी नहीं है! क्योंकि प्रत्येक मानव का हृदय उसी की अलौकिक ज्योति से प्रकाशित है! जिस प्रकार बीज में वृक्ष रहता है और यत्न करने से बीज में से वृक्ष दीखता है। उसी प्रकार यत्न करने से ब्रह्म दीखता है। केवल आवश्यकता है, अपने हृदय-पटल पर पड़े हुए 'माया-मोह' अज्ञानता मूलक 'अहंकार' के पर्दे के उठाने की जिस मानव ने अपनी आंखों से स्वार्थ का चश्मा उतार कर रख दिया, उसीने अपने निर्मल मानस मन्दिर में 'ब्रह्म' की अलौकिक ज्योति के दर्शन कर लिए।

अर्थात् 'ब्रह्म' के समस्त गुणों का प्रकाश मानव की आत्मा में हो सकता है, और उस समय वह चिन्ताओं से मोक्ष पाकर आवागमन से भी मुक्ति पाकर मोक्ष का परमपद पा सकता है। यही है 'ब्रह्मवाद' का सूक्ष्म विशलेषण!

मेधावी

लाखों रुपये का काम मनुष्य अपनी मेधा—बुद्धि से बिगाड़ता और बनाता है। यह "मेधावी" बुद्धि वाले स्थान को सुधारने में अनुपम सिद्धि हुई है। दिमाग़ी काम करने वाले वकील, बैरिस्टर, मुन्सिफ, जज मास्टर विद्यार्थी, उपदेशक, सम्पादक तथा क्लर्क जिन्हें बुद्धि से जीवका उपार्जन करनी होती है उनके लिये प्राण-प्रिय है। स्मर्ण शक्ति—बढ़ाती है। दिमाग़ी कमजोरी मिटा कर ज्ञात तन्तुओं को ताकत देती है। नजले को दूर कर वे समय बालों के सफेद होने को रोकती है। मूल्य १।) प्रत्येक ऋतु सेवन करने योग्य स्वादिष्ट पेय।

यू० पी० केमीकल वर्क्स, मोहनगेट २०, अलीगढ़।

❋ उत्तरावली ❋

यहां पर पाठकों के भेजे प्रश्नों के उत्तर नाम सहित प्रकाशित होते हैं।

१—प्राणायाम करने की विधि—उ० नं० १ संध्या आत्मज्ञान नामक पुस्तक में पढ़िये।

रामचन्द्र आर्य, अजमेर

२—तोतलेपन को:—उ० नं० २—गुजराती अकरकरा को महीन पीसकर जीभ पर सुबह शाम २ हफ्ते तक मलें और काली व लाल मिर्च अधिक खिलाया करें तो जीभ का तोतलापन ठीक हो।

पं० कृष्णदत्त वैद्यराज

३—स्वस्थ्य मनुष्य के लक्षण उत्तर नं० ३

समदोषा: समाग्निश्च समधातु: मलक्रीया प्रसन्नात्मेन्द्रिय मन: स्वास्थ्य इत्यभि धीयते सुश्रुत सहिता का वचन है इसका अभिप्राय: यह है कि दोष (वात पित्त कफ) बराबर हों तीनों में से कोई कमती न हो, अग्नि बराबर धातु सम हो, मल की गति ठीक हो, आत्मा इन्द्रीय और मन प्रसन्न हों उसको स्वस्थपुरुष कहते हैं।

गुरुदयाल "वैद्य" C. T. S.

४—स्वप्नदोष को उ० नं० ४

रात्री को थोड़ा भोजन करें, दिन में कुछ फल अवश्य खावें तेल, मिर्च, खटाई, अरहल, आलू गुड़ आदि गरम चीज न खावें, सुबह शाम, वायु सेवन, आसन व्यायाम अवश्य करें, स्नान, ध्यान से चित्त लगावें, मूत्र त्यागने के पश्चात् इन्द्री को जल से धोवें, सोने के समय हाथ पैर मुँह को धोकर सोवें, ऐसा करने से २ सप्ताह में स्वप्नदोष चला जायगा।

भगवानदेव आर्य

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन।

स्वप्नदोष के सम्बन्ध में भगवानदेव जी का एक बड़ा लेख है जोकि आगामी अङ्क में दिया जायगा।

—सम्पादक

स्मरण शक्ति वर्द्धक योग:—उ० नं० ५

मालकांगनी के बीज मींग १ तो० कदू के बीज की मींग १ तो० उस्त खद्दूस मा०, बादाम की मींग १ तो०, पिस्ता १ तो०, फिन्दक की मींग १ तो० दुध बच्च ४ मा०, मिश्री ऽ सबको कूट पीसकर चूर्ण कर लीजिये मात्रा ४ माशे प्रातः एक तोले मक्खन के साथ। ब्रह्मी और बादाम की ठण्डाई पीना बड़ा श्रेष्ट है।

वानप्रस्थी गुरुदयाल वैद्य C. T. S.
अलीगढ़।

जुकाम के लिये:—उ० नं० ६

रात्री को सोते समय काली मिर्च पिसी ३ माशे लेकर गुनगुने जल अथवा मिश्री मिले दूध के साथ २ दिन फांकने से चला जावेगा, पुराने बिगड़े जुकाम में एक हफ्ते खावें, वायु सेवन करें, विशेष जानने के लिये जुकाम चिकित्सा पुस्तक पढ़ें।

वैद्य गणेशीलाल, गणेश औ० सुदामापुरी।

असली च्यवनप्राश अवलेह बनाना:—उ० नं० ७

त्रिफला १२ तोले, सिरस, अरनी, खंभारी, पाढ़ि, बेल सौनाक, शरविन, पिटवन, गोखरू, भटकटैया, पीपल, कांकड़ासींगी, दाख, गिलोय, नागबाला ऋद्धि सिद्धि, जीवक, ऋषभक, कचूर, वराईकन्द, मौथा, पौकरमूल, काकतुन्डी, काकोली क्षीरकाकौली, असगन्ध, कमलगट्टा, मैदा, महामैदा, इलायची छोटी, अगर चन्दनसफेद प्रत्येक ४-४ तोले लेकर कूट ले, और १६ गुने जल में काढ़ा बनावें। जब चौथाई जल रह जावे तब उतार कर छान लें, फिर बड़े बड़े पके आंवले ४ सेर लें ४० सेर जल में औटावें। जब ५ सेर जल रह जावे तब उतार कर आंवले की गुठली निकाल कर लुगदी को महीन पीस लें, और स्वरस निकाल कर २८ तोले गाय के घी में लुगदी भूने, जब लुगदी भुन जावे तब स्वरस और काढ़ा और ५ सेर मिश्री डाल कर अग्नि पर गाढ़ा करें। जब अवलेह बन जावे तब पीपल ८ तोले बंसलोचन १६ तोले चातुर्जात ४ तोले, शहद १ सेर मिला कर कांच के अथवा मिट्टी के चिकने पात्र में रख लें। मात्रा—६ माशे से २ तोले तक आध पाव दूध के साथ खावें तो समस्त मूत्र और धातु विकार दूर करता है, गरमी और तपैदिक खांसी आदि फेफड़ों के विकार ठीक होते हैं। कमजोरी दूर कर बल बढ़ाता है, शास्त्र में इसका सेवन करना बुड्ढों को जवान बनाना लिखा है। इसके गुणों से डाक्टर भी मोहित हैं। आप न बना सकें तो यू० पी० केमीकल वर्क्स मोहनगेट अलीगढ़ से मंगावें।

रामगोपाल आजाद, बी० ए० अलीगढ़।

नवीन प्रश्न

इस स्तम्भ में ग्राहकों के प्रश्न बिना मूल्य छापे जाते हैं, जो पूँछना चाहें वह लिख भेजें।

८—बच्चों के पिलाने की घुट्टी का क्या नुस्का है,

ग्राहक नं० ७२१

९—मेरी स्त्री सफेद प्रदर के कारण कमजोर और रोगिणी रही आती है। कोई वैद्य महोदय इसकी अनुभूत औषधि लिखने की कृपा करें। ग्राहक नं० ४२४

१०—मेरे पुराने दाद हैं खुजाते रहने से खाल मोटी पड़ गई है सिंग्गी भी लगवाई हैं। बड़ी कीमती देशी विदेशी दवायें भी लगाई हैं, खून साफ़ का अर्क उस्वा आदि भी पिये हैं, लेकिन दाद नहीं जाते। आशा है कि कोई वैद्य डाक्टर अनुभवी दवा लिखेंगे। ग्रा० नं० ९४५

११—मेरी अवस्था ४५ वर्ष की है ६ वर्ष से आँखों में परिवाल हो जाते हैं, उनको उखड़वाती रहती हूँ। भोजन भी मैं ही बनाती हूं। क्या करूँ जोकि पलकों में यह परिवाल पैदा न हों। ग्रा० नं० ९४७

१२—संस्कारों के वैद्यक सम्बन्धी क्या लाभ हैं। ग्रा० नं० २११

सूचना—जो पाठक एवं पाठिकायें किसी प्रश्न का उत्तर लिख सकें वह अवश्य भेजें। आगामी अंक में उनके नाम सहित उत्तर प्रकाशित कर दिये जाँयगे।

हमारे यहाँ बिकती हैं

पेटेन्ट दवायें और गीता प्रेस की पुस्तकें

पता:—महाशय मोहन लाल गुप्त मोहन गेट, अलीगढ़।

समीक्षा संचय

नेहरू चित्रावली—लेखक, सम्पादक, प्रकाशक जीतमल लूडिया, हिन्दी साहित्य मन्दिर अजमेर मूल्य १)

नेहरू चित्रावली में भारत के प्रधान मंत्री तथा विश्वविख्यात् पं० जवाहर लाल नेहरू के बचपन से लेकर सन् १९५४ की वर्ष गांठ तक के विभिन्न स्थानों, व्यक्तियों एवं घटनाओं के साथ ८८ चित्रों का संकलन किया है। ९६ पृष्ठों की पुस्तक की छपाई कागज तथा सामिग्री सभी में अनूठी है। जिस प्रकार गीता प्रेस गोरखपुर धर्म सम्बन्धी साहित्य का स्वात् लागत से भी कम मूल्य पर बेचकर प्रचार और प्रसार के लाभ राष्ट्र निर्माण कर रहा है उसी प्रकार श्री जीतमल जी लूडिया का हिन्दी साहित्य मन्दिर भी राष्ट्रपिता के पुजारी भारतोन्नति के कर्णाधार महारथियों के विचारों का प्रसार कर रहा है। स्वतन्त्र भारत में ऐसे प्रकाशकों की ही आवश्यकता है। पुस्तक बालक, युवा, वृद्ध, नर-नारी ही नहीं अपितु पढ़े और वे पढ़े सभी को उपयोगी है।

तपोभूमि—यह मासिक पत्र मांडलिक आर्य्य प्रतिनिधी सभा, मथुरा का मुख पत्र है। वार्षिक मू० २) सम्पादक ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' एम०ए०, साहित्यरत्न, सि० शास्त्री। इसमें शुद्धी संगठन सम्बन्धी लेख निकलते हैं।

शंकर घुट्टी—आजकल अनेकों नाम वाली बच्चों की घुटी चल रही हैं। लेकिन इसके आविष्कारक वयोवृद्ध लाला ग्यासीराम जी एक अनुभवी वैद्य हैं। घुट्टी अच्छी बनी है। मूल्य भी अधिक नहीं है। एक शीशी।) को वैद्य ग्यासीराम शङ्कर औषधालय कौड़ियागंज, अलीगढ़ से मिलती है। बालक वाले अवश्य मंगावें।

—०:——:०—

आपका रोग

यदि आप को कोई ऐसा छिपा हुआ रोग है जिसे आप शरम के कारण किसी से कह नहीं सकते, तो हमको लिखिये, और साथ में उत्तर के लिये ≥) का टिकट लिफाफे में भेजिये। हम आप को ऐसी सम्मति देंगे कि आप का रोग घर बैठे ठीक हो जायगा।

पता—यू० पी० केमीकल वर्क्स, मोहनगेट, अलीगढ़।

समाचार संचय

ब्रह्मआश्रम चंदौसी–इसके संस्थापक श्रीहरिश्चन्द्रजी आर्य एम० ए० हैं। इस आश्रम की स्थापना का उद्धेय साधु महात्माओं के सतसंग द्वारा 'ब्रह्मवाद' का प्रचार करना है। आपने 'ब्रह्मवाद' पर एक बड़ा ग्रन्थ लिखा है जिसका सूक्ष्मरूप 'ब्रह्मवाद' इस अंक में प्रकाशित किया है। आप 'ब्रह्मवाद' के अच्छे सत्संगी योग्य सज्जन हैं।

चित्तौड़ का किला

गत ६ अप्रैल को आयोजित सभा में विशालजन समूह की उपस्थित में गाड़ी लुहारों का स्वागत श्री माणिक लाल शर्मा ने किया गाड़ी लुहार वह बहादुर जाति है कि जिसे उत्तर प्रदेश में भूबडिया नाम से पुकारा जाता है। यह लोग गाड़ी लेकर लोहे की कढाई तवे कुल्हाड़ी चीमटे आदि लोहे की चीजें बनाकर बेचते फिरते हैं। यह दरिद्री होते हुये भी अपनी ईमानदारी के लिये प्रसिद्धि हैं ६ अप्रैल को प्रधान मंत्री श्री नेहरु जी ने चित्तौड़ के किले पर राष्ट्रीय झंडा फहरा कर उन्हें चित्तौड़ विजय का ज्ञान कराके उन्हें फिर से वस जाने के लिये कहा।

उत्तीर्ण होते ही

मंगल मिष्ठान भंडार बारहसैनी बाजार अलीगढ़ से पुरुस्कार स्वरूप मिष्ठान प्राप्त कीजिए!

भवदीय—
मुन्शीलाल सेवक
बारहसैनी बाजार अलीगढ़।

श्री पं० ब्रह्मदत्त शास्त्री, महोपदेशक आर्य्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ। आप, अलीगढ़ एटा और मथुरा के लिये भ्रमण कर रहे हैं। आप मैजिकलैण्टन पर भी व्याख्यान देते हैं। विवाह आदि संस्कार वैदिक रीति से कराते हैं आप योग्य वक्ता और विद्वान हैं अपने विवाह संस्कारों और उत्सवों पर निमन्त्रण देकर बुलावें। ब्रह्मदत्त शास्त्री आर्य समाज अलीगढ़ के पते पर उन्हें सूचित करें।

श्रमजीवी प्रेस

आकर्षक सुन्दर छपाई के लिये श्रमजीवी प्रिन्टिंग प्रेस भूरापीर हाथरस को याद रखिये।
मैनेजर:–किशोरीलाल महावीर प्रसाद श्रोती हाथरस।

थर्मामेटर मुफ्त
नैनसुधार
श्याम काजल

भीमसैनी कपूर, ममीरा, सफेदा, आदि आदि आखों की बढ़िया औषधियों से बना हुआ परीक्षित और रजिस्टर्ड है।

श्यामकाजल लगाने से लालामी, रोडे, कुकरे, चिपचिपाना, जलन, धुन्ध, दलका, पड़वाल, जाला, नाखूना, सूजन, कीचढ़, आना, गर्मी, खुजली, रातरोंध, कमदीखना आदि रोगों को दूर कर ज्योति बढाता है। और आखों में ठंडक पहुँचाता है। बालक, जवान, बूढ़े, स्त्री, पुरुष, सबको लाभकारी है। हर ऋतु में लगा सकते हैं रोज लगाने से आखों को निरोग और सुन्दर बनाता है। दहेज और दोस्तों को देने से यादगार की चीज है मूल्य ≡) डि०, ३६ डिब्बी कमीशन काट कर कुल ५)रु० में दी जावेगी और साथ में सच्चा आधी मि० का एक थर्मामेटर भी मुफ्त देंगे।

* जेबी डाक्टर *

बड़े बड़े कठिन रोगों को जादू की तरह खो देती है। जैसे हैजा, जुकाम, सर्दी, खांसी, दस्त बदहजमी, पेटदर्द, कान दाँत और पसली का दर्द बुखार आदि को दूर करती है। सफर में बाजारी खराब घी खाने के विकार जगह २ का पानी माफिक नही पड़ता हो, शरीर में सिर से लेकर पेरों तक बाहर या भीतर कोई कैसा ही रोग हो इसके सेवन से शीघ्र ही लाभ होता है जानवरों के काटे व फोड़े खाज खुजली पर फौरन असर करती है। जेबी डाक्टर पास होने से डाक्टरों के पास नहीं दौड़ना पड़ता। मू० ।।।) शी०

यू० पी० केमीकल वर्क्स, मोहन गेट, अलीगढ़।

हाथरस का मशहूर हिन्दी दैनिक पत्र

संग्राम

इसके ताजे समाचार पढ़कर व विज्ञापन देकर लाभ उठाईये आप भी एक बार परीक्षा करो। संग्राम का० हाथरस।

रक्ता

रक्ता से खून की कमी दूर होती है, क्योंकि यह शरीर का खून बढ़ाने में सब से अधिक प्रमाणित हुई है। अपने शरीर को तोल कर फिर सेवन करो। वजन बढ़ाकर शरीर को ताकतवर बनाती है। खून बढ़ाने और स्वास्थ्य तथा शक्ति स्थिर रखने की मीठी स्वादिष्ट दवा है। भूख बढ़ाकर खाना आसानी से हजम हो जाता है। शरीर में ताकत बढ़ने लगती है। पीलापन दूर होकर साफ खून पैदा होता है। सूखा हुआ शरीर हरा होने लगता है। पान्डु, प्रमेह, धातु, क्षीणता, ग्रहणी तपेदिक आदि रोगों से आई दुर्बलता तथा किसी भी कारण से कितनी ही कमजोरी हो गई हो रक्ता से सर्वथा नष्ट हो जाती है। मूल्य २)

नवनारी

नवनारी सेवन करने से बूढी स्त्री भी असली आयु से कहीं कम यानी नवीन अवस्था वाली सी मालूम होने लगेगी। सोते समय सेवन करने से दस्त साफ लाने वाली ताकतवर औषधि है। स्वास्थ्य सौन्दर्य और स्फूर्ति देती है। यदि आप योवनपूर्ण और देखने में आकर्षक जैसी पहले थी वैसी ही स्वस्थ्या होना चाहती हैं तो नवनारी का सेवन करें। मूल्य २)

नोट—बेचने वालों को साइनबोर्ड, हैन्डबिल, कलैन्डर, मुहर आदि सभी चीजें मुफ्त भेजी जाती हैं। और पूरा कमीशन दिया जाता है।

उपयोगी पढ़ने योग पुस्तकें

गुप्त रोग चिकित्सा

लेखक—श्री श्यामलाल 'सुहृद'

इस पुस्तक में स्त्री पुरुषों के गुप्त रोगों के इलाज लिखे हैं। जिन रोगों को लज्जावश किसी से नहीं कह सकते उन छिपे रोगों के कारण तथा अंगों के पूरे २ विवरण प्रत्येक के साथ फोटू देकर बड़ी सरलता से समझाये हैं। साथ में देशी अंग्रेजी, रसादिक और गरीबी सभी प्रकार की औषधियाँ बड़ी २ परीक्षित से लिखी हैं पुस्तक पढ़ कर प्रत्येक स्त्री, पुरुष अपना इलाज आप कर सकते हैं। विवाहित स्त्री पुरुष के तो बड़े काम की पुस्तक है। सादे रंगीन ३० चित्र और ४०० पृष्ठों की जिल्द बन्धी नवीन छपी पुस्तक का मूल्य ४) महसूल १)।

संस्कार विमर्शन—संस्कार किसे कहते हैं और कितने हैं। उनका धार्मिक और वैद्यक सम्बन्धी रहस्य भली भाँति खोला है, युवा स्त्री, पुरुषों के बड़े काम की है। मूल्य =)

जुकाम चिकित्सा—जुकाम कैसे हो जाता है और कैसे ठीक किया जाय बिना दवा दूर करने को क्या खाना चाहिये साथ में वैद्यक यूनानी और अंग्रेजी की बड़ी बड़ी परीक्षित औषधें लिखी हैं। जोकि नये पुराने महीनों के भी जुकाम को शीघ्र दूर करती है। मूल्य ।)

सन्ध्या आत्मज्ञान

सन्ध्या करने की अनेकों पुस्तकें बनी हैं लेकिन "सन्ध्या-आत्म ज्ञान" एक अनूठी ही पुस्तक है। इसमें सन्ध्या करने के सम्बन्ध में जो शंकायें करते हैं उन सबका समाधान बड़ी अच्छी विधि से किया है। मंत्रों तथा अर्थों के अतिरिक्त सन्ध्या से लाभ हानि और प्रमाणार्थ सभी बातें भले प्रकार दर्शाई हैं एक बार भी पढ़ लेने से सन्ध्या का रहस्य भली प्रकार समझ में आ सकता है। मूल्य केवल ।-)

यह इतनी अच्छी पुस्तक है कि बहुत सी समाजों ने दजनों मंगाई हैं।

पता—सुखमार्ग कार्यालय केमीकल प्रेस, मोहनगेट अलीगढ़।

SUKHMARG

Regd. No. A 220

सुखमार्ग

वार्षिक मूल्य १)

सर्व विषय सम्पन्न अपूर्व सामाजिक मासिक पत्र

स्वास्थ्य और चेतना प्राप्ति को पढ़ें ।

पता—सुखमार्ग कार्यालय, केमीकल प्रेस, अलीगढ़ ।

नोट—पांच पते भेजकर अङ्क मुफ्त मँगाइये ।

सेवा में—

श्री सम्पादक वेदप्रकाश

गोविन्दराम हासानन्द

नई सड़क दिल्ली

Editor. Publisher & Printer Shiam Lal Suhrid at the Chemical Press, Aligarh.